सैकुलरिज्म में विश्वास करते हैं, उनकी सही तर्जुमानी करने के लिए क्या आज हमारी सरकार हियुमन राइट्स कमिशन के सामने इस मामले को भेजेगी, नहीं भेज सकती है तो उसके लिए क्या कारण हैं वह कारण हमें मालूम होना चाहिए ताकि हम लोग कह सकें ।

दूसरी बात यह है कि मैं मंत्री महोदय की मार्फत प्रधान मंत्री से कहना चाहता हूं कि जब भी यह मसला यूनाइटेड नेशन्स में आये या सिक्योरिटी कौंसिल में आये तो वह वहां पर सब की एक राय करने के लिये कोशिश करें और जो भी देश उनके मेम्बर हैं उनको चिट्ठियां लिखें और कहे कि सख्त तरीके से इस मामले की मज़म्मत की जाय । साथ ही इस जगह इजराइल के हाथों से निकाल कर किसी इंटरनेशनल एजेंसी के पास रखा जाये ।

श्री दिनेश सिंह : पहला सवाल जो माननीय सदस्य ने हियूमन राइट्स कमिशन बारे में किया उसको मैं समझा नहीं । क्या वह चाहते हैं कि सिक्योरिटी कौंसिल से उसको हटा कर हियूमन् राइटस् कमिशन को भेज दिया जाये ?

श्री स० मो० बनर्जी : दोनों जगह रह सकता है ।

श्री दिनेश सिंह : दोनों जगह ही नहीं इस जगहों पर बातें हो सकती हैं । इसकी कमी नहीं है । लेकिन सिक्योरिटी कौंसिल में ज्यादा अहम तरीके से इस मामले को लिया जा सकता है । इस लिये माननीय सदस्य इस मसले को हियूमन राइट्स कमिशन से मिलायें नहीं । इसमें कई मामले आते हैं । जैसा मैंने कहा कि यह आकुपाइड टेरीटरी है और इजराइल वहां था इसलिये उसकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है, और उस को उन्होंने पूरे तरीके से नहीं निभाया । यह सब मसले सिक्योरिटी कौंसिल में एक बड़े तरीके से उठेंगे । उस के बाद जहां जहां जरूरत हो इस पर बहस की, वह हो सकती है । लेकिन हम तो इस का हल जल्दी निकालना चाहते हैं, और वह हल सिक्योरिटी कौंसिल में ज्यादा आसानी से निकल सकता है । अगर इस के आगे कहीं यह जाता है या ले जाना पड़ता है, तो आगे जो बातचीत हो रही है उस के हिसाब से जहां मुनासिब होगा उन फोरम्स पर बहस हो सकती है ।

दूसरा सुझाव माननीय सदस्य ने रक्खा था कि इस बारे में प्रधान मंत्री कुछ और देशों को लिखें । जब यह सवाल सुरक्षा परिषद् में आयेगा तब जो भी जरूरत होगी उस में हम मदद करेंगे । आज इस के सिलसिले में जो काम करना है उस के लिये हम खुद ही बात कर रहे हैं अरब देशों से और औरों से कि क्या क्या करना है । अरब देशों क भी मीटिंग हो रही है । मीटिंग का अभी कोई फैसला नहीं निकला है । हम उन से काफी समपर्क में हैं । जिन बातों की जरूरत होगी, जिन को हम कर सकते हैं, उन से हम पीछे नहीं हटेंगे ।

12.33 hrs.

POINT OF ORDER

श्री कंवरलाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आप की आज्ञा से प्वाइंट आफ आर्डर उठाना चाहता हूं । प्रधान मंत्री श्री जगजीवन राम और फखरुद्दीन साहब ने स्वतन्त्र पार्टी और जनसंघ के ऊपर यह आरोप लगाया था कि इस राष्ट्रपति के चुनाव में उन्होंने कांग्रेस प्रेजिडेंट से मिल कर एक कांस्पिरेंसी की है गवर्नमेंट को टापल करने के लिये । (**व्यवधान**) कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह फैसला किया है कि यह चार्जेज गलत हैं । (**व्यवधान**) मैं आप के द्वारा मांग करता हूं कि यह सरकार, उस की प्राइम मिनिस्टर माफी मांगे, पब्लिक अपालोजी दें क्योंकि कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह फैसला किया है कि यह चार्जेज गलत हैं । यह मेरी पार्टी की डिसरिप्यूट के लिये है और उस को बदनाम

[श्रीकंवर लाल गुप्त]

करने की एक साजिश है । अगर उन में थोड़ी सी भी आत्मा है, मारल करेज है तो वह पब्लिक अपालोजी दें । यह मेरी मांग है (व्यवधान) । शोर मचाने से कुछ नहीं होगा (व्यवधान) वर्किंग कमेटी ने इस को मान लिया है, और यह लोग भी उस में शामिल थे, कि यह गलत चार्जेज हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं हैरान हूं । हम आदी बन गये हैं कि जो चीज चल रही है अमन चैन से उसको खामख्वाह एक चीज ला कर . .

श्री कंवरलाल गुप्त : क्या मेरी पार्टी के खिलाफ इस तरह से चार्जेज लगाये जा सकते हैं ? कांग्रेस पार्टी ने खुद मान लिया कि यह गलत चार्जेज हैं । इस तरह से कैसे हो सकता है ?

MR. SPEAKER: Shri Gupta came to my Chamber. He brought a motion and I disallowed it. Whatever questions arise between one party and another or in the Congress Working Committee or in the Jan Sangh Committee cannot be raised in this House. He said that inspite of my ruling he would raise it... (*Interruptions*) This is an unhealthy practice. He said that it would be better to give him five minutes as he would otherwise waste half an hour. He may waste the whole day; I will not allow him. He has done this despite that. I am very sorry. Why should it be like this?

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—*Contd.*

BURNING OF AL-AQSA IN JERUSALEM—*contd.*

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी (श्रीमगर): खड़े हुए ।

अध्यक्ष महोदय : काल अटेंशन पर पांच मेम्बरों के नाम आ सकते हैं । बख्शी साहब ने बड़ी दरख्वास्त से मुझ को लिखा है कि अल अक्सा मस्जिद का बड़ा जजबाती मसला है । इसलिये मैं रूल्स को थोड़ा सा इग्नोर करता हूं । वह दो एक मिनट में जो चाहे कह सकते हैं ।

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी : अध्यक्ष महोदय मेरे दीगर साथियों ने मस्जिद अक्सा के जलाये जाने के सिलसिले में जो कुछ कहना था वह कहा । यह महज मुसलमानों के आलम का मसला नहीं है बल्कि तमाम इन्सानियत का मसला है । खास तौर पर हिन्दुस्तान के पचास करोड़ इन्सानों का जिन्होंने मजहबी रवादारी को सिर्फ हिन्दुस्तान तक ही महदूद नहीं रखा बल्कि उस से बाहर भी उस को रक्खा जहां जिस मजहब पर वार हुआ वहां हिन्दुस्तान आगे रहा । इस सिलसिले में हकूमत हिन्द की पालिसी इजराइल के हमले से आज तक जो रही है वह यकीनन काबिले मुबारकबाद है । इसी नाते मैं महज मुसलमान की हैसियत से नहीं बल्कि एक हिन्दुस्तानी के नाते मस्जिद अक्सा के जलाये जाने की मजम्मत करता हूं । यह एक ऐसी चीज है जिस को यहूदी अच्छी तरह से जानते हैं कि मुसलमान मक्का और मदीना के बाद मस्जिद अक्सा को मुतबर्रक मानते हैं और करोड़ों इन्सानों का यह पहला किब्ला था । मैं समझता हूं कि जान बूझ कर यह साजिश हुई महज यरूशलम में नहीं बल्कि तमाम दुनिया में आग भड़काने के लिये और वह आग भड़क उठी । उस में इजराइल आज तक कामयाब हुआ । लेकिन मैं यह भी अच्छी तरह से जानता हूं कि आखिर में उन को शरमिन्दा होना पड़ेगा ।

लेकिन दूसरी बात जो इजराइल ने की कि एक गैर-मुल्की बनशिन्दे आस्ट्रेलिया के रहने वाले के ऊपर जो किसी चार्टर आफ वार के साथ ताल्लुक रखता है अपने ऊपर से यह इल्जाम उठा कर डाल दिया और